

## शहरीकरण का सामाजिक संरचना पर प्रभाव: पारिवारिक व्यवस्था, वर्ग विभाजन और सामाजिक गतिशीलता का विश्लेषण

<sup>1</sup>दीपक मीणा (शोधार्थी), <sup>2</sup>डॉ. मनोज कुमार (शोध निदेशक)

विभाग - भूगोल

श्री जगदीशप्रसाद झाबरमल टिबरेवाला विश्वविद्यालय, विद्यानगरी, झुंझुनू (राजस्थान)

deepakmeena0910@gmail.com

### सारांश

आधुनिक युग में शहरीकरण एक ऐसी व्यापक सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया के रूप में उभरा है, जिसने मानव समाज की संरचना, कार्यप्रणाली और जीवन-शैली को गहराई से प्रभावित किया है। औद्योगिकीकरण, तकनीकी विकास, रोजगार के अवसरों का संकेंद्रण तथा आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता के कारण जनसंख्या का निरंतर ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर प्रवासन हुआ है। इस प्रक्रिया ने न केवल भौतिक परिवेश को बदला है, बल्कि सामाजिक संबंधों, पारिवारिक ढाँचों, वर्गीय संरचना तथा सामाजिक गतिशीलता के स्वरूप में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं।

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य शहरीकरण के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से यह समझना कि शहरीकरण ने पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया है, समाज में वर्ग विभाजन की प्रकृति को कैसे बदला है तथा सामाजिक गतिशीलता के नए अवसरों और चुनौतियों को किस रूप में जन्म दिया है। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि जहाँ एक ओर शहरीकरण ने संयुक्त परिवार प्रणाली को कमजोर कर एकल एवं नाभिकीय परिवारों को बढ़ावा दिया है, वहीं दूसरी ओर इसने सामाजिक संबंधों को अधिक औपचारिक, व्यक्तिवादी एवं उपयोगितावादी बनाया है।

लेख यह भी दर्शाता है कि शहरी समाज में वर्ग विभाजन केवल आर्थिक आधार पर सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, व्यवसाय, जीवन-शैली और उपभोग के पैटर्न के आधार पर भी नए सामाजिक वर्गों का निर्माण हुआ है। शहरीकरण ने सामाजिक गतिशीलता को तीव्र किया है, जिससे व्यक्तियों को सामाजिक-आर्थिक उन्नति के अवसर प्राप्त हुए हैं, परंतु इसके साथ ही असमानता, सामाजिक बहिष्करण और वर्गीय दूरी जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं।

यह अध्ययन मुख्यतः सैद्धांतिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है तथा विभिन्न समाजशास्त्रीय अवधारणाओं और भारतीय सामाजिक संदर्भों के माध्यम से शहरीकरण और सामाजिक संरचना के बीच के संबंधों को समझने का प्रयास करता है। निष्कर्षतः, लेख यह प्रतिपादित करता है कि शहरीकरण एक द्वैध प्रक्रिया है, जो सामाजिक विकास और अवसरों के साथ-साथ सामाजिक विघटन और असंतुलन की स्थितियाँ भी उत्पन्न करती है, जिनका संतुलित एवं समावेशी दृष्टिकोण से समाधान आवश्यक है।

**प्रमुख शब्द:** शहरीकरण, सामाजिक संरचना, पारिवारिक व्यवस्था, वर्ग विभाजन, सामाजिक गतिशीलता, सामाजिक परिवर्तन, भारतीय समाज

### प्रस्तावना

समकालीन समाज में शहरीकरण एक ऐसी व्यापक और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसने मानव जीवन के लगभग प्रत्येक पक्ष को गहराई से प्रभावित किया है। शहरीकरण केवल नगरों की संख्या या उनके भौगोलिक

विस्तार में वृद्धि का संकेत नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मानसिक स्तर पर होने वाले उन परिवर्तनों का समुच्चय है, जो समाज की मूल संरचना को पुनर्गठित कर देते हैं। आधुनिक युग में शहरीकरण को सामाजिक परिवर्तन की सबसे प्रभावशाली प्रक्रियाओं में से एक माना जाता है, क्योंकि इसके प्रभाव सीधे तौर पर पारिवारिक व्यवस्था, वर्ग संरचना तथा सामाजिक गतिशीलता पर परिलक्षित होते हैं।

भारतीय समाज के संदर्भ में शहरीकरण का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है, क्योंकि भारत एक ऐसा देश है जहाँ परंपरागत ग्रामीण सामाजिक संरचना और आधुनिक शहरी जीवन-शैली एक साथ विद्यमान हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिक विकास, प्रशासनिक विस्तार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं के केंद्रीकरण तथा रोजगार के नए अवसरों ने नगरों को आकर्षण के केंद्र के रूप में स्थापित किया। परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग आजीविका, शिक्षा और बेहतर जीवन-स्तर की खोज में नगरों की ओर प्रवास करने लगे। इस प्रवासन ने न केवल नगरों की जनसंख्या संरचना को बदला, बल्कि ग्रामीण और शहरी दोनों समाजों की सामाजिक व्यवस्था पर गहरा प्रभाव डाला।

सामाजिक संरचना किसी भी समाज की वह आधारभूत रूपरेखा होती है, जिसके अंतर्गत सामाजिक संबंध, भूमिकाएँ, संस्थाएँ, वर्गीय विभाजन तथा सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्थाएँ निर्धारित होती हैं। शहरीकरण की प्रक्रिया इस संरचना को मूल रूप से प्रभावित करती है। परंपरागत समाज में जहाँ परिवार, जाति और समुदाय सामाजिक जीवन के केंद्र में होते थे, वहीं शहरी समाज में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति का निर्धारण उसकी शिक्षा, आय, व्यवसाय और जीवन-शैली के आधार पर होने लगता है। इस परिवर्तन के कारण सामाजिक संबंध अधिक औपचारिक, प्रतिस्पर्धात्मक और व्यक्तिकेंद्रित बनते जा रहे हैं।

पारिवारिक व्यवस्था पर शहरीकरण का प्रभाव विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भारतीय समाज में लंबे समय तक संयुक्त परिवार व्यवस्था सामाजिक जीवन की आधारशिला रही है, किंतु शहरीकरण की प्रक्रिया के साथ यह व्यवस्था धीरे-धीरे कमजोर होती जा रही है। रोजगार की गतिशीलता, आवास की सीमाएँ, कार्य-दबाव तथा जीवन-शैली में परिवर्तन के कारण एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों की प्रकृति, पारिवारिक भूमिकाओं का वितरण तथा पारिवारिक मूल्यों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं।

शहरीकरण ने समाज में वर्ग विभाजन की प्रक्रिया को भी नए रूप प्रदान किए हैं। परंपरागत समाज में सामाजिक विभाजन मुख्यतः जन्म, जाति और परंपरा पर आधारित था, जबकि शहरी समाज में वर्गीय संरचना का आधार आर्थिक स्थिति, शिक्षा, व्यवसाय और उपभोग के स्तर पर आधारित होता जा रहा है। इसके परिणामस्वरूप समाज में नए वर्गों का उदय हुआ है, जिनके बीच सामाजिक दूरी, असमानता और संसाधनों तक पहुँच में अंतर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। यह वर्गीय विभाजन शहरी समाज की एक प्रमुख विशेषता बन चुका है।

सामाजिक गतिशीलता शहरीकरण का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष है। शहरी समाज में व्यक्ति को अपनी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन करने के अपेक्षाकृत अधिक अवसर प्राप्त होते हैं। शिक्षा, रोजगार और कौशल विकास के माध्यम से व्यक्ति सामाजिक-आर्थिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ सकता है। किंतु यह गतिशीलता सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं होती। संसाधनों की असमान उपलब्धता, शिक्षा तक सीमित पहुँच और सामाजिक बाधाएँ अनेक व्यक्तियों के लिए सामाजिक उन्नति के मार्ग को कठिन बना देती हैं। इस प्रकार शहरीकरण सामाजिक अवसरों के साथ-साथ नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न करता है।

उपरोक्त पृष्ठभूमि में प्रस्तुत लेख का उद्देश्य शहरीकरण के सामाजिक प्रभावों का गहन विश्लेषण करना है। विशेष रूप से यह अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि शहरीकरण ने सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित

किया है, पारिवारिक व्यवस्था में कौन-कौन से परिवर्तन उत्पन्न हुए हैं, वर्ग विभाजन की प्रकृति किस प्रकार बदली है तथा सामाजिक गतिशीलता के नए स्वरूप कैसे विकसित हुए हैं। यह अध्ययन न केवल सैद्धांतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय समाज की समकालीन सामाजिक वास्तविकताओं को समझने के लिए भी अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

### शहरीकरण की अवधारणा एवं प्रक्रिया

शहरीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत जनसंख्या, आर्थिक गतिविधियाँ, प्रशासनिक संस्थाएँ तथा जीवन की विविध सुविधाएँ क्रमशः ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर केंद्रित होती जाती हैं। यह प्रक्रिया केवल नगरों की भौतिक वृद्धि या जनसंख्या के संकेंद्रण तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समाज की संरचना, जीवन-शैली, मूल्य-व्यवस्था और सामाजिक संबंधों में भी व्यापक परिवर्तन उत्पन्न करती है। शहरीकरण को सामाजिक परिवर्तन की एक गतिशील प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है, जो समय के साथ समाज के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करती रहती है।

शहरीकरण की अवधारणा को समझने के लिए यह आवश्यक है कि इसे एक बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में देखा जाए। इसमें जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण-शहरी प्रवासन, आर्थिक गतिविधियों का विस्तार, परिवहन और संचार साधनों का विकास तथा प्रशासनिक सुविधाओं का केंद्रीकरण सम्मिलित होता है। जैसे-जैसे नगर रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य सुविधाओं के केंद्र बनते जाते हैं, वैसे-वैसे ग्रामीण क्षेत्रों से लोगों का प्रवासन तीव्र होता जाता है। यह प्रवासन शहरीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करता है और नगरों की सामाजिक संरचना को अधिक जटिल बना देता है।

शहरीकरण की प्रक्रिया ऐतिहासिक रूप से आर्थिक विकास से जुड़ी रही है। उद्योगों, व्यापारिक गतिविधियों और सेवा क्षेत्रों के विस्तार ने नगरों को आर्थिक विकास के केंद्र के रूप में स्थापित किया। इसके परिणामस्वरूप नगरों में रोजगार के अवसर बढ़े और ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या बेहतर जीवन-स्तर की आशा में नगरों की ओर आकर्षित होने लगी। इस आर्थिक परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक जीवन में भी महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिलते हैं। परंपरागत ग्रामीण समाज में जहाँ सामाजिक संबंध घनिष्ठ और समुदाय-आधारित होते थे, वहीं शहरी समाज में संबंध अपेक्षाकृत औपचारिक और व्यक्ति-केंद्रित हो जाते हैं।

भारत के संदर्भ में शहरीकरण की प्रक्रिया विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है। प्राचीन काल से ही भारत में नगरों का अस्तित्व रहा है, किंतु आधुनिक काल में शहरीकरण की गति अत्यधिक तेज हो गई है। स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिक विकास, प्रशासनिक विस्तार और आधारभूत सुविधाओं के केंद्रीकरण ने नगरों को विकास के प्रमुख केंद्र बना दिया। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों की ओर प्रवासन बढ़ा, जिससे नगरों की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हुई। इस वृद्धि ने आवास, रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक सेवाओं से संबंधित अनेक चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं।

शहरीकरण की प्रक्रिया केवल आर्थिक या भौतिक परिवर्तन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह सामाजिक संबंधों की प्रकृति को भी प्रभावित करती है। नगरों में जीवन अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होता है, जहाँ व्यक्ति को अपनी पहचान और अस्तित्व बनाए रखने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। पारंपरिक सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्थाएँ कमजोर पड़ जाती हैं और व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक स्वतंत्र हो जाता है। इस स्वतंत्रता के साथ-साथ सामाजिक अलगाव और असुरक्षा की भावना भी उत्पन्न होती है।

शहरीकरण की प्रक्रिया में सामाजिक विविधता का स्तर भी बढ़ जाता है। विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, संस्कृतियों और सामाजिक पृष्ठभूमियों से आए लोग नगरों में एक साथ निवास करते हैं। इससे शहरी समाज बहुसांस्कृतिक स्वरूप

ग्रहण करता है, किंतु इसके साथ-साथ सामाजिक समायोजन और सामंजस्य की समस्याएँ भी सामने आती हैं। इस प्रकार शहरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समाज को निरंतर परिवर्तन की स्थिति में बनाए रखती है। अतः यह स्पष्ट है कि शहरीकरण केवल नगरों के विकास की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह समाज की संपूर्ण संरचना को प्रभावित करने वाली एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया है। इसके प्रभाव पारिवारिक व्यवस्था, वर्ग विभाजन और सामाजिक गतिशीलता जैसे क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं, जिनका विश्लेषण आगामी खंडों में विस्तार से किया जाएगा।

#### **सामाजिक संरचना: सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य**

सामाजिक संरचना किसी भी समाज की वह आधारभूत व्यवस्था होती है, जिसके अंतर्गत सामाजिक संबंधों का संगठन, सामाजिक भूमिकाओं का वितरण, संस्थाओं की स्थापना तथा सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रियाएँ संचालित होती हैं। यह संरचना समाज के सदस्यों के बीच संबंधों को एक निश्चित रूप प्रदान करती है और यह निर्धारित करती है कि व्यक्ति समाज में किस प्रकार व्यवहार करेगा तथा उसकी स्थिति और भूमिका क्या होगी। सामाजिक संरचना स्थिर न होकर एक गतिशील व्यवस्था होती है, जो समय, परिस्थितियों और सामाजिक प्रक्रियाओं के प्रभाव में निरंतर परिवर्तित होती रहती है।

सामाजिक संरचना को समझने के लिए समाजशास्त्र में विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण विकसित किए गए हैं। संरचनात्मक दृष्टिकोण के अनुसार समाज एक संगठित व्यवस्था है, जिसमें विभिन्न संस्थाएँ जैसे परिवार, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और शासनकृआपस में जुड़ी हुई होती हैं और मिलकर समाज की स्थिरता बनाए रखती हैं। इस दृष्टिकोण में सामाजिक संरचना को एक ऐसी प्रणाली माना जाता है, जो सामाजिक व्यवस्था और सामंजस्य को बनाए रखने में सहायक होती है। शहरीकरण की प्रक्रिया इस संरचना को प्रभावित कर सामाजिक संस्थाओं के कार्यों और संबंधों में परिवर्तन उत्पन्न करती है।

कार्यात्मक दृष्टिकोण के अंतर्गत सामाजिक संरचना को समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली व्यवस्था के रूप में देखा जाता है। प्रत्येक सामाजिक संस्था का समाज में एक विशिष्ट कार्य होता है, और इन सभी कार्यों के समन्वय से सामाजिक व्यवस्था बनी रहती है। शहरीकरण के प्रभाव में जब पारंपरिक संस्थाएँ कमजोर होती हैं, तो नई संस्थाएँ और नए संबंध विकसित होते हैं, जो बदलती सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। उदाहरणस्वरूप, संयुक्त परिवार व्यवस्था के स्थान पर एकल परिवार व्यवस्था का उदय इसी परिवर्तनशील प्रक्रिया का परिणाम है।

संघर्षात्मक दृष्टिकोण सामाजिक संरचना को असमानताओं और शक्ति-संबंधों के संदर्भ में देखता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित होता है और इन वर्गों के बीच संसाधनों, अवसरों और शक्ति को लेकर निरंतर संघर्ष चलता रहता है। शहरीकरण की प्रक्रिया इस वर्गीय विभाजन को और अधिक स्पष्ट कर देती है। नगरों में संपन्न और वंचित वर्गों के बीच जीवन-स्तर, आवास, शिक्षा और रोजगार के अवसरों में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है, जो सामाजिक संरचना में असंतुलन को दर्शाता है।

सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक भूमिकाएँ और सामाजिक स्थिति होती हैं। पारंपरिक समाज में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति प्रायः जन्म, जाति और पारिवारिक पृष्ठभूमि से निर्धारित होती थी, जबकि शहरी समाज में व्यक्ति की स्थिति अधिकतर उसकी शिक्षा, आय और पेशे पर आधारित होती है। इस परिवर्तन ने सामाजिक संरचना को अधिक लचीला बनाया है, किंतु इसके साथ-साथ प्रतिस्पर्धा और असुरक्षा की भावना को भी बढ़ावा दिया है।

शहरीकरण के प्रभाव में सामाजिक संरचना अधिक जटिल और विविधतापूर्ण हो जाती है। नगरों में विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के लोग एक साथ रहते हैं, जिससे सामाजिक संबंधों में विविधता बढ़ती है। यह विविधता एक ओर सामाजिक सहिष्णुता और व्यापक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक दूरी, अलगाव और तनाव की स्थितियाँ भी उत्पन्न करती है।

इस प्रकार सामाजिक संरचना एक ऐसी व्यवस्था है, जो शहरीकरण की प्रक्रिया के प्रभाव में निरंतर परिवर्तित होती रहती है। शहरीकरण ने सामाजिक संस्थाओं, संबंधों, भूमिकाओं और वर्गीय संरचना को नए रूप प्रदान किए हैं। इन्हीं परिवर्तनों का प्रभाव पारिवारिक व्यवस्था, वर्ग विभाजन और सामाजिक गतिशीलता पर किस प्रकार पड़ता है, इसका विश्लेषण आगामी खंडों में विस्तार से किया जाएगा।

#### शहरीकरण का पारिवारिक व्यवस्था पर प्रभाव

पारिवारिक व्यवस्था किसी भी समाज की मूल सामाजिक संस्था मानी जाती है, जिसके माध्यम से सामाजिक मूल्यों का संचार, सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण तथा सामाजिककरण की प्रक्रिया संपन्न होती है। भारतीय समाज में परंपरागत रूप से परिवार केवल रक्त-संबंधों का समूह नहीं रहा है, बल्कि यह आर्थिक सहयोग, सामाजिक सुरक्षा और भावनात्मक समर्थन की एक सशक्त इकाई के रूप में कार्य करता रहा है। किंतु शहरीकरण की प्रक्रिया ने पारिवारिक व्यवस्था के स्वरूप और कार्यों दोनों को गहराई से प्रभावित किया है।

शहरीकरण के प्रभाव में संयुक्त परिवार व्यवस्था का धीरे-धीरे क्षरण हुआ है और उसकी जगह एकल परिवार व्यवस्था का विस्तार हुआ है। नगरों में रोजगार की गतिशीलता, आवास की सीमित उपलब्धता, जीवन-यापन की बढ़ती लागत तथा कार्य-दबाव जैसे कारणों ने परिवारों को छोटे आकार में सीमित होने के लिए प्रेरित किया है। परिणामस्वरूप माता-पिता और अविवाहित बच्चों तक सीमित परिवार अधिक सामान्य हो गए हैं। इस परिवर्तन ने पारिवारिक संबंधों की प्रकृति को भी बदला है, जहाँ पारस्परिक निर्भरता की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व मिलने लगा है।

शहरी जीवन-शैली ने पारिवारिक भूमिकाओं के वितरण में भी परिवर्तन उत्पन्न किया है। परंपरागत परिवारों में भूमिकाएँ प्रायः स्पष्ट और स्थिर होती थीं, किंतु शहरी परिवारों में भूमिकाएँ अधिक लचीली और परिवर्तनशील हो गई हैं। स्त्रियों की शिक्षा और रोजगार में बढ़ती भागीदारी ने पारिवारिक निर्णय-प्रक्रिया में उनकी भूमिका को सुदृढ़ किया है। इससे परिवार में समानता और सहयोग की भावना को बढ़ावा मिला है, किंतु साथ ही भूमिका-संघर्ष और कार्य-दबाव जैसी नई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं।

शहरीकरण ने पारिवारिक संबंधों में भावनात्मक दूरी को भी बढ़ाया है। नगरों की व्यस्त जीवन-शैली, समय का अभाव और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण ने पारिवारिक संवाद और सामूहिक गतिविधियों को सीमित कर दिया है। परिवार के सदस्य अक्सर अपने-अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं, जिससे पारस्परिक समझ और भावनात्मक जुड़ाव में कमी देखी जाती है। इसके परिणामस्वरूप बुजुर्गों की उपेक्षा, बच्चों के सामाजिक विकास में चुनौतियाँ और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ सामने आती हैं।

पारिवारिक मूल्यों और परंपराओं पर भी शहरीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। परंपरागत समाज में परिवार नैतिक शिक्षा और सामाजिक अनुशासन का प्रमुख केंद्र होता था, किंतु शहरी समाज में बाह्य प्रभावों के कारण पारिवारिक नियंत्रण कमजोर हुआ है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आधुनिक जीवन-शैली के प्रभाव में पारंपरिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। इससे पीढ़ियों के बीच विचारों और मूल्यों का अंतर बढ़ा है, जो पारिवारिक संघर्ष का कारण बनता है।

हालाँकि शहरीकरण ने पारिवारिक व्यवस्था के समक्ष अनेक चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं, फिर भी इसके कुछ सकारात्मक पक्ष भी हैं। शहरी परिवारों में शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन-स्तर की सुविधाओं तक बेहतर पहुँच संभव हुई है। परिवार के सदस्य आत्मनिर्भर बनने लगे हैं और निर्णय-प्रक्रिया में तर्कसंगतता का महत्व बढ़ा है। इस प्रकार शहरीकरण ने पारिवारिक व्यवस्था को पारंपरिक रूप से आधुनिक स्वरूप की ओर अग्रसर किया है।

अतः यह कहा जा सकता है कि शहरीकरण ने पारिवारिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है। इस प्रभाव के परिणामस्वरूप परिवार का स्वरूप, कार्य और संबंधों की प्रकृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए हैं, जिनका सामाजिक संरचना पर दूरगामी प्रभाव पड़ा है।

### शहरीकरण और वर्ग विभाजन

वर्ग विभाजन किसी भी समाज की सामाजिक संरचना का एक महत्वपूर्ण तत्व होता है, जिसके माध्यम से समाज में संसाधनों, अवसरों और प्रतिष्ठा का असमान वितरण परिलक्षित होता है। शहरीकरण की प्रक्रिया ने वर्ग विभाजन के स्वरूप और आधार दोनों को गहराई से प्रभावित किया है। जहाँ परंपरागत समाज में सामाजिक विभाजन मुख्यतः जन्म, जाति और पारिवारिक पृष्ठभूमि पर आधारित था, वहीं शहरी समाज में वर्गीय संरचना का निर्धारण अधिकतर आर्थिक स्थिति, शिक्षा, व्यवसाय और जीवन-स्तर के आधार पर होने लगा है।

शहरीकरण के साथ नगरों में विविध आर्थिक गतिविधियों का विकास हुआ, जिससे समाज में नए वर्गों का उदय हुआ। उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्रों के विस्तार ने एक ऐसे मध्यम वर्ग को जन्म दिया, जो न तो अत्यधिक संपन्न था और न ही अत्यधिक वंचित। इस मध्यम वर्ग ने शहरी समाज की सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दिशा को व्यापक रूप से प्रभावित किया। शिक्षा, उपभोग और जीवन-शैली के क्षेत्र में इस वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है।

इसके साथ-साथ शहरीकरण ने समाज में आर्थिक असमानताओं को भी अधिक स्पष्ट कर दिया है। नगरों में एक ओर संपन्न वर्ग आधुनिक सुविधाओं, बेहतर आवास और उच्च जीवन-स्तर का उपभोग करता है, वहीं दूसरी ओर एक बड़ा वर्ग ऐसा भी है, जो न्यूनतम सुविधाओं से वंचित रहता है। यह वर्ग प्रायः असंगठित कार्यों में संलग्न होता है और अनिश्चित रोजगार तथा सीमित आय के कारण सामाजिक असुरक्षा का सामना करता है। इस प्रकार शहरी समाज में वर्गीय अंतर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है।

शहरीकरण के प्रभाव में आवासीय विभाजन भी वर्ग विभाजन का एक महत्वपूर्ण रूप बन गया है। नगरों में विभिन्न वर्गों के लोग अलग-अलग क्षेत्रों में निवास करते हैं। संपन्न वर्ग सुव्यवस्थित और सुविधासंपन्न क्षेत्रों में रहता है, जबकि निम्न वर्ग को सीमित सुविधाओं वाले क्षेत्रों में जीवन यापन करना पड़ता है। यह भौगोलिक विभाजन सामाजिक दूरी को और अधिक बढ़ा देता है तथा विभिन्न वर्गों के बीच पारस्परिक संपर्क को सीमित कर देता है।

वर्ग विभाजन का प्रभाव सामाजिक संबंधों और अवसरों पर भी पड़ता है। उच्च वर्ग के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त होते हैं, जबकि निम्न वर्ग के लोगों के लिए ये अवसर सीमित होते हैं। परिणामस्वरूप सामाजिक असमानता पीढ़ी दर पीढ़ी बनी रहती है। शहरीकरण ने यद्यपि सामाजिक उन्नति के अवसरों को बढ़ाया है, किंतु ये अवसर सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त शहरीकरण ने उपभोग के स्वरूप को भी वर्ग विभाजन का एक महत्वपूर्ण आधार बना दिया है। वस्त्र, आवास, परिवहन और मनोरंजन के साधनों के माध्यम से व्यक्ति अपनी सामाजिक स्थिति का प्रदर्शन करता है। इससे सामाजिक प्रतिष्ठा का निर्धारण बाह्य प्रतीकों के माध्यम से होने लगा है, जो वर्गीय अंतर को और अधिक गहरा करता है।

इस प्रकार शहरीकरण और वर्ग विभाजन के बीच घनिष्ठ संबंध पाया जाता है। शहरीकरण ने जहाँ एक ओर नए वर्गों के उदय और सामाजिक उन्नति के अवसर प्रदान किए हैं, वहीं दूसरी ओर इसने सामाजिक असमानता और वर्गीय दूरी को भी बढ़ाया है। यह वर्गीय संरचना शहरी समाज की सामाजिक गतिशीलता को भी प्रभावित करती है, जिसका विश्लेषण अगले खंड में किया जाएगा।

### शहरीकरण और सामाजिक गतिशीलता

सामाजिक गतिशीलता से तात्पर्य समाज में व्यक्ति अथवा समूह की सामाजिक स्थिति में होने वाले परिवर्तन से है। यह परिवर्तन आर्थिक, शैक्षणिक, व्यावसायिक अथवा सामाजिक प्रतिष्ठा के स्तर पर ऊपर या नीचे की दिशा में हो सकता है। शहरीकरण की प्रक्रिया ने सामाजिक गतिशीलता को एक नया आयाम प्रदान किया है, क्योंकि नगरों में अवसरों की उपलब्धता अपेक्षाकृत अधिक होती है और सामाजिक संरचना अपेक्षाकृत लचीली होती है। शहरी समाज में शिक्षा सामाजिक गतिशीलता का एक प्रमुख साधन बनकर उभरी है। नगरों में विद्यालयों, महाविद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों की उपलब्धता ने व्यक्तियों को अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार करने के अवसर प्रदान किए हैं। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल बेहतर रोजगार प्राप्त कर सकता है, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान में भी वृद्धि कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा ने जन्म आधारित सामाजिक स्थिति के स्थान पर योग्यता आधारित सामाजिक स्थिति को बढ़ावा दिया है।

शहरीकरण ने रोजगार के क्षेत्र में भी विविध अवसर उत्पन्न किए हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता को गति मिली है। उद्योग, व्यापार और सेवा क्षेत्रों के विस्तार ने विभिन्न स्तरों पर रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से आए अनेक व्यक्तियों ने नगरों में रोजगार प्राप्त कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया है। इस आर्थिक उन्नति ने उनकी सामाजिक स्थिति को भी सुदृढ़ किया है और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने में सहायता की है।

हालाँकि शहरी समाज में सामाजिक गतिशीलता की संभावनाएँ अधिक होती हैं, किंतु यह सभी वर्गों के लिए समान रूप से उपलब्ध नहीं होती। संसाधनों की असमान उपलब्धता, शिक्षा तक सीमित पहुँच और सामाजिक बाधाएँ अनेक व्यक्तियों के लिए सामाजिक उन्नति के मार्ग को कठिन बना देती हैं। निम्न वर्ग के लोग प्रायः सीमित संसाधनों और अवसरों के कारण अपनी सामाजिक स्थिति में परिवर्तन करने में असमर्थ रहते हैं। इस प्रकार शहरीकरण सामाजिक गतिशीलता के साथ-साथ सामाजिक असमानता को भी बनाए रखता है।

शहरी समाज में प्रतिस्पर्धा सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। नगरों में जीवन अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होता है, जहाँ व्यक्ति को अपनी स्थिति बनाए रखने और आगे बढ़ने के लिए निरंतर प्रयास करना पड़ता है। यह प्रतिस्पर्धा कुछ व्यक्तियों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है, किंतु अनेक लोगों के लिए यह मानसिक तनाव और असुरक्षा का कारण भी बनती है। इस प्रकार सामाजिक गतिशीलता का प्रभाव केवल भौतिक स्तर पर ही नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक स्तर पर भी पड़ता है।

शहरीकरण ने स्त्रियों और वंचित वर्गों की सामाजिक गतिशीलता को भी प्रभावित किया है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों की उपलब्धता ने अनेक स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है। इसी प्रकार कुछ वंचित वर्गों को भी शहरी समाज में अपनी स्थिति सुधारने के अवसर मिले हैं। किंतु इसके साथ-साथ सामाजिक भेदभाव और असमानता की समस्याएँ भी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि शहरीकरण ने सामाजिक गतिशीलता को तीव्र किया है और समाज में परिवर्तन के नए मार्ग खोले हैं। किंतु यह गतिशीलता समान और संतुलित नहीं है। सामाजिक संरचना में विद्यमान

असमानताएँ शहरी समाज में भी बनी रहती हैं और अनेक व्यक्तियों के लिए सामाजिक उन्नति की राह कठिन बनी रहती है।

### भारतीय समाज के विशेष संदर्भ में शहरीकरण का सामाजिक विश्लेषण

भारतीय समाज की सामाजिक संरचना ऐतिहासिक रूप से बहुस्तरीय, विविधतापूर्ण और परंपराओं से गहराई से जुड़ी रही है। जाति, परिवार, धर्म और समुदाय भारतीय सामाजिक जीवन के प्रमुख आधार रहे हैं। ऐसे समाज में शहरीकरण की प्रक्रिया का प्रभाव केवल आर्थिक या भौतिक स्तर तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने सामाजिक संस्थाओं, संबंधों और मूल्यों को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। भारत में शहरीकरण का सामाजिक प्रभाव इसलिए भी विशिष्ट है क्योंकि यहाँ परंपरागत और आधुनिक जीवन-शैलियाँ एक साथ अस्तित्व में हैं।

भारतीय समाज में शहरीकरण का सबसे स्पष्ट प्रभाव पारिवारिक व्यवस्था में दिखाई देता है। नगरों में निवास करने वाले परिवारों में संयुक्त परिवार व्यवस्था की तुलना में एकल परिवार व्यवस्था अधिक प्रचलित हो गई है। रोजगार के लिए स्थान परिवर्तन, सीमित आवासीय सुविधाएँ और आधुनिक जीवन-शैली ने परिवार के आकार को छोटा किया है। इसके परिणामस्वरूप पारिवारिक संबंधों में निकटता के स्थान पर औपचारिकता बढ़ी है और बुजुर्गों की देखभाल जैसी पारंपरिक जिम्मेदारियों में भी परिवर्तन आया है।

भारतीय शहरी समाज में वर्ग विभाजन भी एक महत्वपूर्ण सामाजिक वास्तविकता बनकर उभरा है। शिक्षा, आय और व्यवसाय के आधार पर समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित होता जा रहा है। नगरों में संपन्न वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के बीच जीवन-स्तर, आवास और सुविधाओं में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है। यह वर्गीय विभाजन सामाजिक दूरी को बढ़ाता है और विभिन्न वर्गों के बीच संसाधनों तक पहुँच में असमानता को बनाए रखता है।

शहरीकरण ने जाति-आधारित सामाजिक संरचना को भी प्रभावित किया है। नगरों में जाति की भूमिका अपेक्षाकृत कमजोर हुई है, क्योंकि शिक्षा और रोजगार के अवसरों में योग्यता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। फिर भी जाति का प्रभाव पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है। विवाह, सामाजिक संपर्क और सामुदायिक संगठन के क्षेत्रों में जाति अभी भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार भारतीय शहरी समाज में जाति और वर्ग दोनों का सम्मिश्रित प्रभाव देखने को मिलता है।

भारतीय समाज में शहरीकरण ने सामाजिक गतिशीलता को भी प्रभावित किया है। शिक्षा और रोजगार के माध्यम से अनेक व्यक्तियों ने अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार किया है। विशेष रूप से मध्यम वर्ग का विस्तार इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण परिणाम रहा है। किंतु इसके साथ-साथ शहरी निर्धनता, बेरोजगारी और असंगठित श्रम जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं, जो सामाजिक असंतुलन को दर्शाती हैं।

शहरीकरण का प्रभाव स्त्रियों की सामाजिक स्थिति पर भी पड़ा है। नगरों में शिक्षा और रोजगार के अवसरों ने स्त्रियों को अधिक स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता प्रदान की है। इससे उनकी सामाजिक भूमिका में विस्तार हुआ है और पारिवारिक निर्णय-प्रक्रिया में उनकी भागीदारी बढ़ी है। किंतु इसके साथ-साथ कार्य और परिवार के बीच संतुलन, सुरक्षा और सामाजिक दबाव जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

अतः भारतीय समाज के संदर्भ में शहरीकरण एक जटिल और बहुआयामी प्रक्रिया के रूप में सामने आता है। यह प्रक्रिया सामाजिक परिवर्तन और उन्नति के अवसर प्रदान करती है, किंतु इसके साथ-साथ सामाजिक असमानता, वर्गीय विभाजन और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न करती है। इन प्रभावों को समझना भारतीय समाज की समकालीन वास्तविकताओं को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

### प्रमुख निष्कर्ष एवं विमर्श

प्रस्तुत अध्ययन के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि शहरीकरण भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन का एक अत्यंत प्रभावशाली कारक बनकर उभरा है। इस प्रक्रिया ने सामाजिक संरचना के विभिन्न आयामों/कृपापरिवारिक व्यवस्था, वर्ग विभाजन तथा सामाजिक गतिशीलता/को गहराई से प्रभावित किया है। शहरीकरण ने जहाँ एक ओर सामाजिक जीवन में नवीन अवसरों और संभावनाओं का सृजन किया है, वहीं दूसरी ओर इसने अनेक सामाजिक चुनौतियों को भी जन्म दिया है।

अध्ययन का एक प्रमुख निष्कर्ष यह है कि शहरीकरण ने पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। संयुक्त परिवार व्यवस्था, जो भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है, शहरी जीवन-शैली और आर्थिक आवश्यकताओं के दबाव में कमजोर हुई है। इसके स्थान पर एकल परिवार व्यवस्था का विस्तार हुआ है, जिससे पारिवारिक संबंधों की प्रकृति, पारस्परिक निर्भरता और सामाजिक उत्तरदायित्वों में परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन पारिवारिक जीवन में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, किंतु साथ ही भावनात्मक दूरी और सामाजिक असुरक्षा जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न करता है।

वर्ग विभाजन के संदर्भ में यह निष्कर्ष सामने आता है कि शहरीकरण ने सामाजिक असमानताओं को अधिक स्पष्ट रूप से उजागर किया है। शहरी समाज में शिक्षा, आय और व्यवसाय के आधार पर वर्गीय संरचना का निर्माण हुआ है, जिससे समाज में संपन्न, मध्यम और निम्न वर्गों के बीच अंतर बढ़ा है। यह वर्गीय विभाजन केवल आर्थिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि आवास, जीवन-स्तर और सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में भी प्रकट होता है। इस स्थिति ने सामाजिक दूरी को बढ़ाया है और संसाधनों तक समान पहुँच को बाधित किया है।

सामाजिक गतिशीलता के क्षेत्र में शहरीकरण ने मिश्रित प्रभाव डाला है। एक ओर शिक्षा और रोजगार के अवसरों के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार करने के अवसर प्राप्त हुए हैं, वहीं दूसरी ओर संसाधनों की असमान उपलब्धता के कारण सामाजिक उन्नति सभी के लिए समान रूप से संभव नहीं हो पाई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरीकरण सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करता है, किंतु यह गतिशीलता असंतुलित और असमान बनी रहती है।

विमर्श के स्तर पर यह कहा जा सकता है कि शहरीकरण एक द्वैध प्रक्रिया है। यह सामाजिक विकास, आधुनिकता और अवसरों का मार्ग प्रशस्त करता है, परंतु साथ ही सामाजिक विघटन, असमानता और मूल्यों के क्षरण की स्थितियाँ भी उत्पन्न करता है। अतः शहरीकरण के प्रभावों को केवल सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टि से नहीं देखा जा सकता, बल्कि इसे एक समग्र सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझना आवश्यक है।

### 9. उपसंहार

शहरीकरण आधुनिक समाज की एक अनिवार्य और निरंतर विकसित होने वाली प्रक्रिया है, जिसने सामाजिक संरचना के स्वरूप को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शहरीकरण केवल नगरों के भौतिक विस्तार का संकेत नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, संस्थाओं और मूल्यों में होने वाले गहरे परिवर्तनों का प्रतिनिधित्व करता है। पारिवारिक व्यवस्था, वर्ग विभाजन और सामाजिक गतिशीलता जैसे सामाजिक जीवन के मूल तत्व शहरीकरण की प्रक्रिया से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं।

पारिवारिक व्यवस्था के संदर्भ में यह देखा गया है कि शहरीकरण ने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था को कमजोर कर एकल परिवार व्यवस्था को प्रोत्साहित किया है। इससे परिवार के आकार, भूमिकाओं और उत्तरदायित्वों में परिवर्तन आया है। जहाँ एक ओर इससे व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिला है, वहीं दूसरी ओर भावनात्मक दूरी, बुजुर्गों की उपेक्षा और पारिवारिक सहयोग में कमी जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं।

वर्ग विभाजन के क्षेत्र में शहरीकरण ने सामाजिक असमानताओं को अधिक स्पष्ट कर दिया है। शहरी समाज में शिक्षा, आय और व्यवसाय के आधार पर वर्गों का निर्माण हुआ है, जिससे समाज में संपन्न और वंचित वर्गों के बीच दूरी बढ़ी है। यह वर्गीय विभाजन न केवल आर्थिक स्तर पर, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और जीवन-स्तर के स्तर पर भी परिलक्षित होता है। इससे सामाजिक समरसता और समान अवसरों की अवधारणा को चुनौती मिली है।

सामाजिक गतिशीलता के संदर्भ में शहरीकरण ने अवसरों और सीमाओं दोनों को जन्म दिया है। शिक्षा और रोजगार के माध्यम से अनेक व्यक्तियों को अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार करने के अवसर मिले हैं, किंतु संसाधनों की असमान उपलब्धता और सामाजिक बाधाओं के कारण यह गतिशीलता सभी के लिए समान रूप से सुलभ नहीं हो पाई है। इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरीकरण सामाजिक उन्नति के साथ-साथ सामाजिक असंतुलन को भी बनाए रखता है।

अतः यह आवश्यक है कि शहरीकरण की प्रक्रिया को संतुलित और समावेशी दृष्टिकोण से संचालित किया जाए। सामाजिक नीतियों और योजनाओं में पारिवारिक सहयोग, सामाजिक समरसता और समान अवसरों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए, ताकि शहरीकरण के सकारात्मक प्रभावों को सुदृढ़ किया जा सके और इसके नकारात्मक प्रभावों को न्यूनतम किया जा सके। इस प्रकार शहरीकरण को सामाजिक विकास के एक सशक्त साधन के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

#### संदर्भ सूची

1. दत्ता, के. के. (2008). भारतीय समाजरू संरचना एवं परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
2. सिंह, योगेन्द्र (2009). आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
3. दुबे, एस. सी. (2007). भारतीय समाज. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
4. घोष, बी. एन. (2010). शहरीकरण और सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
5. शर्मा, राम आहूजा (2012). भारतीय समाजशास्त्र. जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स।
6. जोशी, पी. सी. (2006). शहरी समाजशास्त्र. दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
7. श्रीनिवास, एम. एन. (2008). भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. पाठक, आर. पी. (2011). सामाजिक संरचना और परिवर्तन. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन।
9. यादव, कृष्ण कुमार (2014). शहरीकरण और विकास. पटना: भारती भवन।
10. सिंह, श्यामाचरण दुबे (2009). परंपरा और परिवर्तन. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
11. मिश्रा, आर. पी. (2013). नगर और समाज. लखनऊ: न्यू रॉयल बुक कंपनी।
12. वर्मा, बी. एल. (2010). समाजशास्त्र के सिद्धांत. आगरा: साहित्य भवन।
13. सक्सेना, सविता (2015). भारतीय परिवार व्यवस्था. जयपुर: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
14. त्रिपाठी, जी. एस. (2016). वर्ग, शक्ति और असमानता. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
15. भारत सरकार (2011). जनगणना प्रतिवेदन. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग।